इकाई 16 बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ/निगम और इनकी बढ़ती हुई भूमिका

इकाई की रूपरेखा

16.0 उद्देश्य
16.1 प्रस्तावना
16.2 बहुराष्ट्रीय कार्यकलाप
  16.2.1 बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ/निगम क्या हैं?
  16.2.2 बहुराष्ट्रीय संगठनों के स्वरूप
  16.2.3 प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के निर्धारक
16.3 आर्थिक विकास में बहुराष्ट्रीय कंपनियों/निगमों की भूमिका
16.4 सारांश
16.5 शब्दावली
16.6 कुछ उपयोगी पुस्तकें एवं संदर्भ
16.7 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

16.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- बहुराष्ट्रीय फर्मों और उनके कार्यकलापों के विभिन्न पहलुओं को समझ सकेंगे;
- बहुराष्ट्रीय कंपनियों के कार्यकरण से परिचित हो सकेंगे;
- देश के आर्थिक विकास और कल्याण में उनकी भूमिका समझ सकेंगे; और
- बहुराष्ट्रीय कार्यकलापों के सकारात्मक तथा नकारात्मक प्रभावों की पहचान कर सकेंगे।

16.1 प्रस्तावना

बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ/निगम, जिन्हें आमतौर पर एम एन सी के नाम से अधिक जाना जाता है, आज अधिकांश अर्थव्यवस्थाओं, चाहे वे विकासशील हों अथवा विकसित की मुख्य विशेषताएँ हैं। यह आर्थिक संगठनों के प्रमुख स्वरूपों में से एक है जिसका प्रसार युद्ध पश्चात् अवधि में शुरू हुआ तथा इसका महत्त्व बढ़ने लगा था। कुछ महत्त्वपूर्ण शब्द जैसे 'प्रत्यक्ष विदेशी निवेश' (एफ डी आई), 'अन्तरराष्ट्रीय संयुक्त उद्यम' और 'अन्तरराष्ट्रीय विलय और अधिग्रहण' बहुराष्ट्रीय कार्यकलापों के कुछ स्वरूपों को ही अभिहित करते हैं।

आमतौर पर (संदर्भित) और एक कामचलाऊ परिभाषा के रूप में बहुराष्ट्रीय फर्म वे हैं जो एक से अधिक देशों में उत्पादन प्रक्रिया के स्वामी हैं, इसे नियंत्रित करती हैं तथा उसका प्रबन्धन देखती हैं। युद्धोपरांत अवधि में बहुराष्ट्रीय कार्यकलापों के महत्त्व का अनुमान इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि बहुराष्ट्रीय कंपनियों/निगमों का कुल विश्व निर्गत में करीब 25 प्रतिशत का हिस्सा है। कुछ एम एन सी जैसे जनरल मोटर्स और एक्सॉन अपने भौगोलिक विस्तार की दृष्टि से इतने फैले हुए हैं और आकार में इतने बड़े हैं कि उनका कुल वार्षिक बिक्री कारोबार कुछ देशों के राष्ट्रीय आय से भी अधिक हो सकता है। युनाइटेड स्टेट्स, यूनाइटेड किंगडम, जापान, जर्मनी, नीदरलैंड्स, फ्रांस, स्विट्जरलैंड और इटली आदि कुछ

ऐसे उल्लेखनीय स्रोत अथवा देश हैं जहाँ से बड़े पैमाने पर बहिर्मुखी निवेश हुआ है। विश्व के 100 सबसे बड़े एम एन सी यूनाइटेड स्टेट्स, जापान, फ्रांस, यूनाइटेड किंगडम और जर्मनी के हैं। कम से कम 1970 तक यू एस ए और यू के प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के सबसे बड़े स्रोत थे, तथापि जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है भारी प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का प्रवाह सिर्फ़ विकसित देशों की ओर से नहीं हुआ अपितु विकासशील देशों की ओर से भी हुआ। विश्व के कुछ सबसे बड़े एम एन सी में जेनरल मोटर्स (यू एस ए), फोर्ड मोटर्स (यू एस ए), रायल डच/शेल ग्रुप (नीदरलैंड/यूके), डैमलर बेंज (जर्मनी), नेस्ले (स्ट्रिजरलैंड), फिएट (इटली) और रेनॉल्ट (फ्रांस) हैं। विकासशील विश्व की सबसे बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियों में से अधिकांश हांगकांग, चीन और दक्षिण कोरिया गणराज्य की हैं। विकासशील विश्व की प्रमुख बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ देवू कारपारेशन (कोरिया गणराज्य), सैमसंग (कोरिया गणराज्य), एसर ग्रुप (चीन का ताइवान प्रांत), कैथे पैसिफिक एयरवेज (हांगकांग, चीन), एल जी इलैक्ट्रॉनिक्स (कोरिया गणराज्य), सिंगापुर एयरलाइन्स (सिंगापुर), इत्यादि हैं। भारतीय बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ, जिन्होंने विदेशों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है वे हैं रिलायंस उद्योग, टाटा इस्पात, टेल्को, गोदरेज, प्लैनेट एशिया और माइक्रोलैण्ड। विदेशों में परिसम्पत्तियों के आधार पर निर्धारित रैंक के अनुसार विकासशील देशों की 50 सबसे बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियों में रिलायंस उद्योग (39वाँ स्थान) की गणना की जाती है।

नवीनतम आँकड़ों के अनुसार अस्सी के दशक के उत्तरार्द्ध तक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्राप्त करने वाले अधिकांश देश एशिया, लैटिन अमेरिका और अफ्रीका के हैं। नवीनतम विश्व निवेश रिपोर्ट के अनुसार, विश्व की सबसे बड़ी 100 बहुराष्ट्रीय कंपनियों की 1808 बिलियन डॉलर की विदेशी परिसम्पत्तियाँ हैं, विदेशों में इनकी बिक्री 2149 बिलियन डॉलर मूल्य के बराबर है तथा इनमें 5 मिलियन से अधिक विदेशी कर्मचारी कार्यरत हैं। विकासशील देशों में बहुराष्ट्रीय कार्यकलाप और उस प्रयोजन से प्रत्यक्ष विदेशी निवेश मुख्य रूप से विनिर्माण और प्रसंस्करण उद्योगों से जुड़े हुए हैं। तथापि, बाद में सेवा क्षेत्र में भी बहुराष्ट्रीय कंपनियों की उपस्थिति तेजी से बढ़ी। उद्योग-वार ब्यौरे से पता चलता है कि बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने इलैक्ट्रॉनिक/ इलैक्ट्रिकल उद्योग, फार्मास्यूटिकल्स, रसायन, ओटोमोटिव, पेट्रोलियम और खनन, खाद्य और बीवरेज उद्योगों में मुख्य रूप से उद्यम स्थापित किया है।

भारत में, सत्तर के दशक के मध्य के बाद से बहुराष्ट्रीय कंपनियों की उपस्थिति नगण्य थी जब कुछ विद्यमान बहुराष्ट्रीय कंपनियों को देश से निकाल बाहर किया गया। तथापि, समय बीतने के साथ भारतीय अर्थव्यवस्था में बहुराष्ट्रीय कार्यकलाप पुन: बढ़ने लगा है। जब से भारत ने उदारीकरण के साथ भूमंडलीकृत युग में प्रवेश किया है, विभिन्न क्षेत्र निजी निवेश के लिए खोल दिए गए तथा प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का विशेष रूप से स्वागत किया गया। भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश उसके केन्द्रीकरण का अनुमान पिछले कुछ वर्षों में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश अन्तर्वाह की राशि से लगाया जा सकता है। प्रेस सूचना ब्यूरो, भारत सरकार के अनुसार, विगत 4 वर्षों में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की सकारात्मक वृद्धि रही है। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश अन्तर्वाह जो 1998 में 13339 करोड़ रु. था वर्ष 2000 में बढ़कर 19000 करोड़ रु. से अधिक हो गया है। भारत में कुल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश अन्तर्वाह (अप्रैल 2001 तक) 55144 करोड़ रु. रहा है। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के साथ-साथ बहुराष्ट्रीय कार्यकलाप के अन्य स्वरूपों की उपस्थिति भी उल्लेखनीय रही है। भारत में कुछ प्रमुख बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ इस प्रकार हैं : एशिया ब्राउन बॉवेरी (एबीबी), सिटी बैंक, एच एस बी सी, एल जी, फिलिप्स, सैमसंग, सीमेन्स, शेल, इत्यादि। भारत में बहुराष्ट्रीय कंपनियों का हित किसी एक अथवा कुछ ही क्षेत्रों तक सीमित नहीं है; अपितु यह कई परम्परागत तथा ग़ैर परम्परागत क्षेत्रों में फैल गया है। अगस्त 1991 से सितम्बर 1999 के बीच स्वीकृत प्रत्यक्ष विदेशी निवेश और तकनीकी

सहयोग से पता चलता है कि विद्युत क्षेत्र, दूर-संचार, विद्युत उपकरण, परिवहन, रसायन और खाद्य क्षेत्र आदि में बृहत् बहुराष्ट्रीय कंपनियों की अधिक रुचि रही है। इनमें से विद्युत क्षेत्र और दूर-संचार दो प्रमुख क्षेत्र हैं जिसमें अधिकतम स्वीकृतियाँ दी गई हैं। यदि हम इन क्षेत्रों में स्वीकृतियों की प्रवृत्ति को देखें तो प्रतीत होता है कि निकट भविष्य में आधारभूत संरचना क्षेत्र में बड़े पैमाने पर बहुराष्ट्रीय मूल्यवर्द्धन कार्यकलाप देखने को मिलेगा।

बोध प्रश्न 1

1) भारत में ओटोमोबाइल विनिर्माण में लगी कम से कम 3 बहुराष्ट्रीय कंपनियों (उनके स्वदेश के नाम के साथ) की पहचान कीजिए?

.....

.....

.....

.....

.....

2) भारत में टिकाऊ उपभोक्ता वस्तुओं जैसे फ्रिज, वाशिंग मशीन इत्यादि का विनिर्माण करने वाली कम से कम 3 बहुराष्ट्रीय कंपनियों (उनके स्वदेश के नाम के साथ) की पहचान कीजिए?

.....

.....

.....

.....

.....

3) सबसे बड़े 5 स्रोत देशों (3 विकसित विश्व से और 2 विकासशील विश्व से) का नाम बताइये जहाँ से बृहत् बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ आती हैं।

.....

.....

.....

.....

.....

16.2 बहुराष्ट्रीय कार्यकलाप

आर्थिक विकास में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की भूमिका तथा इनके प्रभावों को जानने से पूर्व यह जानना बेहतर होगा कि ये कम्पनियाँ किस तरह का कार्य करती हैं। इसके लिए आइए, पहले देखते हैं कि बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ हैं क्या?

16.2.1 बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ/निगम क्या हैं?

एक कंपनी जिसके आर्थिक कार्यकलाप अपने देश की सीमाओं से बाहर फैले होते हैं को

परम्परागत रूप से बहुराष्ट्रीय कंपनी निगम के रूप में जाना जाता है। दूसरे शब्दों में, जब एक कंपनी निगम अपने उत्पादन निर्णयों के लिए संपूर्ण भूमंडलीय बाज़ार पर विचार करता है तो इसे बहुराष्ट्रीय कंपनी निगम कहा जाता है। एम एन सी बहुराष्ट्रीय 'कंपनी' अथवा 'निगम' हो सकती है क्योंकि इनमें से अधिकांश कंपनियों के शेयर (Stocks) सार्वजनिक स्वामित्व में होते हैं। साहित्य में 'कंपनी' और 'उपक्रम' का उपयोग सामान्यतया समानार्थी के रूप में किया जाता है, इस प्रकार बहुराष्ट्रीय कंपनियों (एम एन सी) और बहुराष्ट्रीय उपक्रमों (एम एन ई) का एक दूसरे के स्थान पर भी प्रयोग करने की प्रवृत्ति होती है। तथापि, इनमें सूक्ष्म अंतर है। कतिपय साझेदारी फर्म हैं, जिनका संगठन निगमों की भाँति नहीं है; इस प्रकार एम एन ई (बहुराष्ट्रीय उपक्रम) एक व्यापक परिभाषा है, जिसके अन्तर्गत एक से अधिक देशों में कार्यशील सभी फर्म आते हैं। एक अन्य शब्द, जिसका उपयोग 'एम एन ई' अथवा एम एन सी के साथ-साथ किया जाता है वह है 'पारदेशीय कंपनियाँ (Transnational Companies)। इस शब्द का उपयोग मूलरूप से उन कंपनियों के संदर्भ में किया गया था जिनका स्वामित्व तथा प्रबन्धन उन अस्तित्वों के नियंत्रण में था जो एक से अधिक देशों के थे, उदाहरण के लिए, रॉयल डच शेल, जिसका स्वामित्व और प्रबन्धन संयुक्त रूप से यू के और नीदरलैंड में स्थित आर्थिक सत्ता के हाथ में है। दूसरे शब्दों में, सत्ता दो या अधिक देशों में फैला हुआ है। कुल मिलाकर, एम एन सी और टी एन सी दोनों की परिभाषा एक उपक्रम के रूप में की जा सकती है जो प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में संलग्न हैं और इस प्रकार एक से अधिक देश में मूल्य संवर्द्धन कार्यकलापों की स्वामी हैं अथवा उसका नियंत्रण करती हैं (डनिंग, 1996)। इस प्रकार उनका वर्गीकरण करने का अनेक तरीका है किंतु बहुधा प्रयोग की जाने वाली व्यावहारिक परिभाषा यह है कि बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ स्टॉक एक्सचेंज (शेयर बाज़ार) में सूचीबद्ध वे कंपनियाँ हैं जिसमें अधिकांश शेयर विदेशी प्रवर्तक/संयुक्त उद्यमी का होता है। वे पूर्ण अथवा आंशिक स्वामित्व वाली अनुषंगियों के अन्तरराष्ट्रीय प्रचालन का भाग हो सकती हैं, सभी अपने आय को समेकित नहीं करती हैं, अपितु वे सामान्यतया बहुराष्ट्रीय कंपनी के रूप में समूह बनाती हैं।

इस परिभाषा के अलावा बहुराष्ट्रीय कार्यकलापों पर और भी कई दृष्टि से देखा जा सकता है। एक छोर पर कुछ फर्में हो सकती हैं जो विभिन्न देशों में कार्यरत रहती हैं। वे मूल फर्म की अनुषंगी के रूप में किंतु स्वतंत्र रूप से स्थानीय बाज़ारों की आवश्यकताओं को पूरा करती हैं। एक दूसरा प्रकार भी हो सकता है जिसमें बहुराष्ट्रीय फर्म भूमंडलीय स्तर पर कार्यरत होती है, विभिन्न देशों में इनकी शाखाएँ होती हैं तथापि भूमंडलीय समन्वित संजाल (नेटवर्क) के रूप में न्यूनाधिक समेकित ढंग से कार्य करती है। इस प्रकार, बहुराष्ट्रीय कार्यकलापों को उनकी व्यवस्था, अन्तर्सम्बन्ध तथा समन्वय के स्वरूप के आधार पर अलग-अलग ढंग से देखने की प्रवृत्ति रही है।

इसी प्रकार, विश्लेषणात्मक दृष्टि से, बहुराष्ट्रीय अथवा पारदेशीय (Transnational) कार्यकलापों का अनुमान विभिन्न तरीकों से लगाया जाता है जैसे (क) विदेशी परिसम्पत्तियों का हिस्सा (ख) विदेशी अनुषंगियों की संख्या तथा उनका आकार, (ग) देशों की संख्या जिसमें इसका विस्तार मूल्य संवर्द्धन कार्यकलापों के लिए है, (घ) विदेशी बिक्री और (ड.) विदेशी नियोजन, इत्यादि। स्वामित्व और प्रबन्धन की स्थानबद्धता किस हद तक है, को भी बहुराष्ट्रीयता अथवा पारदेशीयता की सीमा का माप माना जाता है (डनिंग, 1996)। तथापि, इन सभी मानदंडों के बारे में कोई निर्दिष्ट नियम अथवा आधार नहीं है जो बहुराष्ट्रीयकरण की सीमा की व्याख्या कर सके।

यह अत्यन्त रुचिकर होगा कि बहुराष्ट्रीय कार्यकलाप अथवा संबंधित देशों की बाह्योन्मुखी सरकारें

प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का संवर्द्धन करती हैं। ऐसा इस उद्देश्य से किया जाता है कि दीर्घकाल में बहुराष्ट्रीय कार्यकलापों का व्यापक आर्थिक और राजनीतिक परिणाम होगा। इस विश्वास के साथ, कुछ मामलों में, यहाँ तक कि राष्ट्रीय सरकारों ने भी बहुराष्ट्रीय कार्यकलापों में हाथ बंटाया है।

बोध प्रश्न 2

1) बहुराष्ट्रीय से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2) 'बहुराष्ट्रीय' और 'पारदेशीय' निगम के बीच क्या अंतर है?

.....

.....

.....

.....

.....

3) सही अथवा गलत बताएँ।

क) विदेश की X कंपनी एक भारतीय कंपनी के शेयरो में बिना नियंत्रणकारी हितों के निवेश करती है। X कंपनी को बहुराष्ट्रीय कहा जा सकता है। (सही/गलत)

ख) न्यूयॉर्क की Y कंपनी का भारत में ग्रीनफील्ड उद्यम है। Y कंपनी को बहुराष्ट्रीय कहा जा सकता है। (सही/गलत)

16.2.2 बहुराष्ट्रीय संगठनों के स्वरूप

एक बहुराष्ट्रीय उपक्रम का स्वामित्व अथवा नियंत्रण और प्रबन्धन निजी अथवा सार्वजनिक (राज्य-स्वामित्व और राज्य प्रबन्धन) तौर पर हो सकता है। बहुराष्ट्रीय उपक्रमों की परिसम्पत्तियों का स्वामित्व तथा इनका प्रबन्धन विभिन्न तरीकों से किया जा सकता है। (i) सिर्फ़ एक देश की सत्ता के स्वामित्व में हो और वह इनका प्रबन्धन करती हैं (ii) राष्ट्रीय नियंत्रण में हो किंतु अन्तरराष्ट्रीय तौर पर स्वामित्व और प्रबन्धन में होती है और (iii) अन्तरराष्ट्रीय तौर पर इनका स्वामित्व और प्रबन्धन हो।

इनके संगठन के तरीके के आधार पर बहुराष्ट्रीय कार्यकलापों का विभिन्न स्वरूप विश्व में देखने को मिलता है। सभी बहुराष्ट्रीय उपक्रमों की एक मुख्य विशेषता यह होती है कि उनके मूल्य संवर्द्धन कार्यकलाप राष्ट्रीय सीमाओं के आर-पार चलती हैं। बहुराष्ट्रीय कार्यकलाप का सबसे सरल स्वरूप अन्तरराष्ट्रीय बिक्री है जिसमें फर्म अपने देश में उत्पादन करता है और किसी अन्य देश में बेचता है। दूसरा, उनका विपणन कारोबार भी सीमाओं के आर-पार चलते है। इस प्रकार वे न सिर्फ़ उत्पादन में अपितु विपणन कारोबार में भी अन्तरराष्ट्रीय प्रचालन के अंग हैं। बाज़ार और उत्पादन के प्रति उनकी विश्व व्यापी अथवा भूमंडलीय दृष्टि होती है।

बहुराष्ट्रीय कार्यकलाप का सर्वाधिक प्रमुख स्वरूप प्रत्यक्ष विदेशी निवेश अथवा पूर्ण स्वामित्व वाली विदेशी अनुषंगी है। ओ ई सी डी परिभाषा को उद्धृत करते हुए विश्व निवेश रिपोर्ट के अनुसार "प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की परिभाषा एक अर्थव्यवस्था में निवासी सत्ता (प्रत्यक्ष विदेशी निवेशक अथवा मूल कंपनी) प्रत्यक्ष विदेशी निवेशक के अलावा अर्थव्यवस्था में निवासी उपक्रम (एफ डी आई उपक्रम अथवा सम्बद्ध उपक्रम अथवा विदेशी सम्बद्धता) के निवेश जिसमें दीर्घकालीन संबंध निहित होता है तथा स्थायी हित और नियंत्रण को परिलक्षित करता है।" दूसरे शब्दों में, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश उस समय होता है जब एक देश की कोई कंपनी किसी दूसरे देश में अवस्थित एक संगठनात्मक सत्ता की स्वामित्व हासिल करने के लिए निवेश करता है। अन्तरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आई एम एफ) ने अपने सांख्यिकीय प्रयोजनों के लिए विदेशी निवेश की परिभाषा प्रत्यक्ष रूप में की है यदि निवेशक की किसी उपक्रम में कम से कम 10 प्रतिशत शेयर हिस्सेदारी है। वस्तुत: किसी भी सत्ता के लिए प्रबन्धन में अपनी उपस्थिति दर्ज कराने के लिए 10 प्रतिशत शेयर हिस्सेदारी पर्याप्त है। तथापि, कभी-कभी कम शेयर रखने वाली सत्ता भी प्रबन्धन में काफी सक्रिय भूमिका निभाती है जबकि अधिक शेयर रखने वाली सत्ता भी प्रबन्धन में निष्क्रिय भूमिका निभाना पसन्द करती है। 'पूर्ण स्वामित्व वाली विदेशी अनुषंगी कंपनियों' के मामले में, जैसा कि नाम से ही प्रतीत होता है किसी विशेष देश की फर्म किसी दूसरे देश में अनुषंगी के रूप में निवेश करती हैं जिसमें इसका अनुषंगी कंपनी पर पूरा-पूरा नियंत्रण होता है। इस मामले में, इसके स्वामित्व में कोई परिवर्तन निहित नहीं होता है; इस प्रकार एक स्थान से दूसरे स्थान में हस्तांतरित संसाधनों पर मूल फर्म का पूरा-पूरा नियंत्रण बना रहता है। इस तरह का इक्विटी प्रबन्धन होता है जिसमें मूल फर्म (मूल देश का फर्म) के पास अपने नियंत्रणाधीन संसाधनों को हस्तांतरिक करने का अधिकार होता है। भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का उदाहरण सोनी इंडिया, एल जी इत्यादि हो सकता है। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का दूसरा स्वरूप स्थानीय फर्म का अधिग्रहण (विदेश में) अथवा इसका विलय करना है। अंन्तरराष्ट्रीय अथवा सीमा-पार विलय के मामले में दो विभिन्न विलयकारी फर्मों (स्थानीय और विदेशी फर्म) की परिसम्पत्तियाँ और प्रचालन एक नई वैधानिक सत्ता को जन्म देती हैं जबकि सीमा-पार अधिग्रहण के मामले में परिसम्पत्तियों का नियंत्रण, स्वामित्व अधिकार और अधिग्रहित फर्म का प्रबन्धन अधिग्रहण करने वाली विदेशी फर्म को हस्तांतरित हो जाता हैं।

पूरे भूमंडल में प्रचलित बहुराष्ट्रीय संगठन का दूसरा उल्लेखनीय स्वरूप अन्तरराष्ट्रीय संयुक्त उद्यम है। इस प्रकार के संगठन में मूल देश की फर्म मेज़बान देश में विद्यमान फर्म के साथ संयुक्त उद्यम की स्थापना करती है। एक नई सत्ता की स्थापना होती है जिसमें दो या दो से अधिक सहभागी फर्म का इक्विटी पूँजी के इतने बड़े हिस्से पर नियंत्रण रहता है कि कंपनी में वह निर्णायक भूमिका निभा सके। अन्तरराष्ट्रीय अथवा सीमा-पार संयुक्त उद्यम में सम्मिलित आर्थिक सत्ता दो या दो से अधिक देशों का प्रतिनिधित्व कर सकती हैं। भारत में बिड़ला यामहा, डी सी एम टोयोटा, मोदी जेरॉक्स, काइनेटिक होण्डा, महिन्द्रा ब्रिटिश टेलीकॉम इत्यादि जैसे कुछ अन्तरराष्ट्रीय संयुक्त उद्यम हैं। संगठन का एक अन्य महत्वपूर्ण स्वरूप विदेशी अल्पसंख्यक शेयर पूँजी है।

बहुराष्ट्रीय संगठनात्मक व्यवस्थाओं पर स्वामित्व की दृष्टि से देखने के साथ-साथ यदि इस पर अधिक व्यापक परिदृश्य में देखा जाए तो बहुराष्ट्रीय कार्यकलापों में अनेक अन्य संगठनात्मक स्वरूप सम्मिलित हैं। आज के विश्व में, कारोबारी संबंध के विभिन्न स्वरूपों ने बहुराष्ट्रीय उपक्रमों की परिभाषा को व्यापक बना दिया है। यदि कारोबारी संबंधों पर भी विचार किया जाए तथा यदि ग़ैर-इक्विटी व्यवस्थाओं की भी इसके साथ गणना की जाए तब वास्तविक

विश्व में कम से कम 5 विभिन्न प्रकार के बहुराष्ट्रीय संगठन दिखाई पड़ते हैं। ये हैं : लाइसेन्सिंग, फ्रेंचाइजिंग, मैनेजमेण्ट कॉन्ट्रैक्ट्स (प्रबन्धन संविदा), टर्नकी उद्यम, इंटरनेशनल सब-कॉन्ट्रैक्टिंग (अन्तरराष्ट्रीय उप-संविदा) स्ट्रेटेजिक एलायंसेज (रणनीतिक गठबंधन), इत्यादि। संगठन के इन सभी स्वरूपों में इक्विटी भागीदारी शामिल नहीं है, इस प्रकार वित्तीय पूँजी पर कोई स्वामित्व अथवा नियंत्रणकारी अधिकार नहीं होता है। तथापि, कारोबार के स्वरूप के अनुसार मूल फर्म (मूल देश की फर्म) संसाधनों और क्षमताओं जैसे प्रौद्योगिकी, पेटेन्ट्स, प्रबन्धन दक्षता, उद्यमिता इत्यादि के ऊपर अपना नियंत्रण रख सकती है जो उन्हें कतिपय लाभ पहुँचा सकता है।

बोध प्रश्न 3

1) प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफ डी आई) की परिभाषा बताइये?

.....

.....

.....

.....

.....

2) बहुराष्ट्रीय कार्यकलापों के विभिन्न स्वरूपों की पहचान कीजिए?

.....

.....

.....

.....

.....

3) भारत में पाँच अन्तरराष्ट्रीय संयुक्त उद्यमों का नाम बताइये और इन उद्यमों में सम्मिलित बहुराष्ट्रीय कंपनियों/निगमों की पहचान कीजिए?

.....

.....

.....

.....

.....

16.2.3 प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के निर्धारक

अनेक प्रकार के कारकों की क्रिया और प्रतिक्रिया के परिणामस्वरूप फर्म बहुराष्ट्रीय कार्यकलापों में शामिल होते हैं। ऐसे कतिपय प्रेरक कारक हैं जिसके कारण फर्म सीमा-पार निवेश करते हैं। बहुराष्ट्रीय कार्यकलापों की व्याख्या दो प्रकार से की जा सकती है। एक, विदेश या अन्तरराष्ट्रीय उत्पादन का उद्देश्य और दूसरा, बहुराष्ट्रीय कार्यकलापों की आर्थिक और व्यवहारवादी निर्धारकों की पहचान करना। सर्वप्रथम फर्म अन्तरराष्ट्रीय उत्पादन क्यों करती हैं अथवा विदेशी उत्पादन के उनके उद्देश्य क्या हैं, पर चर्चा की जाएगी। तत्पश्चात् बहुराष्ट्रीय उपक्रमों के आर्थिक और व्यवहारवादी निर्धारकों की

व्याख्या की जाएगी। उसके बाद विदेश में प्रत्यक्ष निवेश के उत्तरदायी कारकों और बाधाओं पर चर्चा की जाएगी।

वर्तमान साहित्य के अनुसार, तीन मुख्य उद्देश्यों जैसे 'संसाधन प्राप्त करने के उद्देश्य', 'बाज़ार प्राप्त करने के उद्देश्य, और दक्षता-प्राप्त करने के उद्देश्य' से फर्म विदेश में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश करने के लिए प्रेरित होती है। सीमा पार उद्यम करने का तात्कालिक उद्देश्य कतिपय संसाधनों का अधिग्रहण करना है जो कम वास्तविक लागत पर उपलब्ध है तथा इस उपक्रम को निश्चित लाभ प्राप्त होता है। लम्बे समय तक प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य रहा है। ऐतिहासिक विवरणों से पता चलता है कि कुछ विकसित देशों के आरम्भिक निवेशकों के लिए प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के पीछे मुख्य उद्देश्य खनिजों और प्राथमिक उत्पादों के विश्वसनीय स्रोत की उपलब्धता रहा है। यद्यपि कि समय बीतने के साथ प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के लिए प्रेरक के रूप में प्राकृतिक संसाधनों के महत्त्व में कमी आई है किंतु इसका महत्व पूरी तरह से समाप्त नहीं हुआ है। प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता के अलावा, फर्म कम लागत पर उत्पादन के अवसर खोजते हैं। इस प्रकार, अनेक मूल्य संवर्द्धन कार्यकलापों में सस्ते श्रमिकों की उपलब्धता प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का मुख्य निर्धारक है। बाज़ार खोजने का उद्देश्य भी अत्यन्त महत्त्वहपूर्ण है क्योंकि फर्म विशेष बाज़ार में बने रहना तथा विकास करना चाहती है। इस प्रकार एक फर्म विद्यमान बाज़ार में प्रतिस्पर्धी बने रहना चाहती है अथवा अपने बाज़ार का विस्तार करना चाहती है। इसलिए, बहुराष्ट्रीय कार्यकलाप, अभी तक अछूते नए बाज़ार अथवा जब बाज़ार में प्रवेश का वैकल्पिक मार्ग जैसे निर्यात, लाभप्रद नही रह जाता है, तब उसमें सीधे प्रवेश का प्रयास करती है। इस प्रकार अछूते नए बाज़ार के अवसर और/अथवा और अधिक विस्तार का अवसर फर्मों को प्रत्यक्ष विदेशी निवेश और अन्य प्रकार के बहुराष्ट्रीय कार्यकलाप के लिए अन्य प्रमुख प्रेरक बड़े पैमाने की मितव्ययिता का लाभ उठाना और भौगोलिक रूप से बिखरे हुए कार्यकलापों के समान शासन के माध्यम से अवसर और जोखिम का बँटवारा होता है।

साहित्य में, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के अनेक सिद्धान्त हैं। अन्तरराष्ट्रीय उत्पादन की सबसे प्रसिद्ध व्याख्या जो शिक्षा के क्षेत्र में भी लोकप्रिय है वह है, डनिंग का 'इक्लेकटिक पाराडिग्म' (चयनशील प्रतिमान)। यद्यपि कि चयनशील प्रतिमान प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की व्याख्या करता है लेकिन यह विदेशों में प्रवेश के विभिन्न प्रकारों के बीच भेद नहीं करता है। यह मुख्य रूप से ग्रीनफील्ड उद्यमों की व्याख्या करता है। डनिंग के चयनशील प्रतिमान से पता चलता है कि जब निम्नलिखित तीन कारक एक साथ विद्यमान रहते हैं तब प्रत्यक्ष विदेशी निवेश होता है अर्थात् (i) स्वामित्व आपेक्षिक लाभ जैसे पेटेण्ट, स्वामित्व प्रौद्योगिकी इत्यादि, (ii) मेज़बान देशों की अवस्थिति लाभ जैसे मेज़बान देश में बृहत् बाज़ार अथवा स्थानीय संसाधनों का कम लागत इत्यादि और (iii) अन्तरराष्ट्रीयकरण लाभ। पहला कारक फर्म आपेक्षिक निर्धारक को प्रदर्शित करता है, जबकि अवस्थिति संबंधी लाभ विशेष देश से जुड़ा होता है जिससे यह स्पष्ट होता है कि प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का प्रवाह कुछ विशेष देशों की ओर ही होता है न कि सभी देशों की ओर। इस प्रकार स्वामित्व, अवस्थिति और अन्तरराष्ट्रीयकरण प्रतिमान से निम्नलिखित प्रश्नों का हल निकलता है जैसे (क) कौन से फर्म प्रत्यक्ष विदेशी निवेश करते हैं, (ख) फर्म प्रत्यक्ष विदेशी निवेश कहाँ करते हैं और (ग) वे बेचने की बजाए प्रत्यक्ष निवेश के माध्यम से अपने लाभ को आभ्यंतरिक क्यों करना चाहते हैं। इस प्रकार कारकों का समूह उत्पादन का स्वरूप और बाज़ार में आपूर्ति और सेवा व्यवस्था को निर्धारित करता है।

जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, शुद्ध उद्देश्यों के अलावा, कुछ कारक आकृष्ट करने वाले और कुछ विदेशों में निवेश के लिए प्रेरक कारक होते हैं जिसके कारण फर्म अपनी

राष्ट्रीय सीमाओं से बाहर निवेश करने के लिए आकर्षित होती हैं। फर्मों को आकृष्ट करने वाले कारक जो इस दिशा में कार्य करते हैं वे प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को आकर्षित करने के लिए विभिन्न देशों द्वारा बनाए गए नीतिगत ढाँचे हैं। यह साधारण-सी बात है कि प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का किसी देश की ओर प्रवाह तब तक नहीं हो सकता है जब तक कि संबंधित देश सजग रूप से प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को अपनी ओर आकर्षित नहीं करे अथवा इसके प्रवाह को सुगम बनाए। इस प्रकार देशों को पर्याप्त रूप से खुला होना चाहिए और प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के अन्तर्वाह की अनुमति देकर वे अवसर का सृजन करते हैं। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को आकर्षित करने के लिए समुचित प्रेरक तंत्र होना चाहिए। नीतियाँ जो हर तरह से अर्थात् प्रत्यक्ष विदेशी निवेश संबंधी अन्तरराष्ट्रीय समझौता, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, संयुक्त उद्यम इत्यादि के अनुकूल होती हैं अधिक बहुराष्ट्रीय कार्यकलापों अथवा भागीदारी को आकर्षित करती हैं। प्रशुल्क (टैरिफ) और कर-रहित बाधाओं से संबंधित व्यापार नीतियाँ भी अन्तरराष्ट्रीय निवेश और मूल्य संवर्धित कार्यकलाप के प्रवाह के निर्धारण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। एक मेज़बान देश की व्यापार नीति के अनुसार कोई फर्म वहाँ निर्यात करने, अथवा लाइसेन्स देने अथवा प्रत्यक्ष निवेश करने पर विचार कर सकती है। घरेलू कर नीति एक अन्य पहलू है जो प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के प्रवाह को निर्धारित करती है। इन सबके साथ-साथ अनेक देशों में निजीकरण के उपाय जो खासकर 1990 के दशक से शुरू हुए हैं ने भी बहुराष्ट्रीय कार्यकलापों को बढ़ावा दिया है। इस प्रकार निजीकरण की नीति जो सरकार की खुलेपन और कतिपय क्षेत्रों से अपना हाथ खींचने की मंशा प्रकट करती है, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के प्रवाह को निर्धारित करती है। दूसरा संबंधित मुद्दा बाज़ार की संरचना विशेषकर प्रतिस्पर्धा तथा विलय और अधिग्रहण से संबंधित घरेलू नीति है। विदेशी अनुषंगी कंपनियों को लक्ष्य करके बनाई गई नीतियाँ और कंपनी खोलने तथा बंद करने के नियम भी प्रत्यक्ष घरेलू निवेश के लिए महत्त्वपूर्ण निर्धारक हैं। बहुराष्ट्रीय निवेशकों को निष्पक्ष और समभाव व्यवहार सहित समान अवसर उपलब्ध कराने के लिए घरेलू नीतियाँ तथा निवेश संबंधी विवादों के निबटारे के लिए अन्तरराष्ट्रीय साधन का प्रावधान प्रत्यक्ष निवेश को सुगम बनाता है तथा बहुराष्ट्रीय कार्यकलापों को बढ़ावा देता है। कतिपय निवेश विनिर्दिष्ट सकारात्मक उपायों के अलावा नीति संबंधी मामले जैसे निवेश का सृजन करने वाले क्रियाकलाप, निवेश प्रोत्साहनों, निवेश उपरान्त सेवाओं और सुगम निवेश सुविधाओं जो प्रशासनिक तथा नौकरशाही की जटिलताओं से मुक्त हों और आवश्यक आधारभूत संरचना के प्रावधान के माध्यम से निवेश को बढ़ावा देना बाह्योन्मुखी प्रत्यक्ष निवेश के लिए महत्त्वपूर्ण कारक बनता जा रहा है। अंततः बहुराष्ट्रीय प्रचालनों के लिए जो चीज सबसे जरूरी है वह है घरेलू राजनीतिक तथा आर्थिक स्थायित्व।

उपर्युक्त विश्लेषण की एक कठिनाई यह है कि यह मेज़बान देश में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के प्रवाह को सुगम बना सकता है किंतु क्या प्रत्यक्ष विदेशी निवेश होगा अथवा नहीं होगा निश्चित तौर पर अन्य पहलुओं/कारकों पर भी निर्भर करता है। इस प्रकार प्रत्यक्ष विदेशी निवेश अथवा बहुराष्ट्रीय अनुकूल नीतिगत ढाँचा एक आवश्यक शर्त हो सकता है किंतु यह किसी विशेष देश में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के वास्तव में होने के लिए पर्याप्त नहीं भी हो सकता है।

बाहर की ओर प्रेरित करने वाला सर्वाधिक प्रमुख कारक घरेलू बाज़ार में कड़ी प्रतिस्पर्धा है जो फर्म को विदेशी भूभागों में उद्यम करने को बाध्य करता है। इसके साथ, कतिपय कार्यकलाप हैं जिसमें उत्पादन के चरणों को भौतिक रूप से अलग किया जा सकता है। विशेषकर इस प्रकार के कार्यकलापों में उत्पादन के विशेष चरण के लिए उपलब्ध सस्ते श्रम वाले देशों में उत्पादन स्थल स्थापित करना भूमंडलीय परिदृश्य बन गया है। उदाहरण के लिए, कम्प्यूटर उद्योग में, उत्पादन के श्रम प्रधान चरणों, को कम लागत वाले विनिर्माण आधारों में हस्तांतरित

किया जा रहा है और उत्पादन के महत्त्वपूर्ण चरणों को मूल देश में ही कार्यरूप दिया जा रहा है। विदेशी भूमि में उद्यम स्थापित करना कभी-कभी इसलिए जरूरी हो जाता है कि कतिपय देशों में जहाँ पहले निर्यात करके माँग पूरी की जाती थी द्वारा खड़ी की गई प्रशुल्क (टैरिफ) बाधाओं से बचा जा सके। इस परिदृश्य में, सबसे अच्छा विकल्प विदेश में प्रत्यक्ष निवेश करना है। 90 के दशक के भूमंडलीकरण की धारा और निजीकरण के उपायों के साथ एक अन्य घटना जो त्वरित प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को बढ़ावा दे रही है, निवेश के लिए द्विपक्षीय समझौता और बढ़ती हुई क्षेत्रीय अखंडता है तथा प्रदेश के अंदर व्यापारिक कारोबार के लागत को कम करने के लिए व्यापार को बढ़ावा देना है।

बोध प्रश्न 4

1) वे मुख्य उद्देश्य क्या हैं जिसके कारण एक फर्म अन्तरराष्ट्रीय उत्पादन करती है?

.....

.....

.....

.....

.....

2) 'चयनशील प्रतिमान' किससे संबंधित है?

.....

.....

.....

.....

.....

3) मेज़बान देश की 5 अलग-अलग घरेलू नीतियों की पहचान कीजिए जो प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को प्रभावित कर सकता है?

.....

.....

.....

.....

.....

16.3 आर्थिक विकास में बहुराष्ट्रीय कंपनियों/निगमों की भूमिका

भूमंडलीय संस्थाओं द्वारा बहुराष्ट्रीय उपक्रमों को बहुधा विकास का प्रेरक माना जाता है। संभावित रूप से, बहुराष्ट्रीय उपक्रम विभिन्न क्षेत्रों जैसे पूँजी निर्माण, मानव संसाधन, पर्यावरण, प्रौद्योगिकी और मूल देश के साथ-साथ मेज़बान देश के व्यापार में योगदान कर सकता है। स्थानीय कंपनियों के साथ अपनी सहलग्नता (अनुबंध) के माध्यम से वे पूँजी निर्माण में योगदान कर सकते हैं तथा साथ ही कार्यकुशलता में वृद्धि कर सकते हैं। बहुराष्ट्रीय उपक्रमों की उपस्थिति रोज़गार के सृजन, विश्वस्तरीय प्रबन्धकीय कौशल को उपलब्ध कराने, प्रशिक्षण

प्रदान करने तथा यहाँ तक कि सीखने में भी सहायक हो सकती है। यह भी विश्वास किया जाता है कि बहुराष्ट्रीय उपक्रम अर्द्धनियोजित अथवा अनियोजित संसाधनों का उपयोग करने में सहायक हो सकती है। इस प्रकार बहुराष्ट्रीय उद्यम विकास और रोज़गार में सहायक होते हैं तथा संसाधनों के इष्टतम उपयोग और संसाधनों की गुणवत्ता में उन्नयन से मेज़बान देश को लाभ हो सकता है।

कम विकसित देशों में संसाधनों के अभाव के मद्देनजर बहुराष्ट्रीय उपक्रमों द्वारा किया गया निवेश वरदान सिद्ध हो सकता है तथा और अधिक विकास को प्रेरित करता है। तथापि, अनुबंध की अनुपस्थिति से अंत:क्षेत्र अर्थव्यवस्था का सृजन होता है। यह सर्वविदित तथ्य है कि बहुराष्ट्रीय उपक्रम आधुनिक प्रौद्योगिकी, स्थापित अनुसंधान और विकास के विपुल संग्रह हैं और औद्योगिक उन्नयन के लिए वरदान सिद्ध हो सकते हैं। मूल फर्म सामान्यतया मेज़बान देश के फर्मों को सर्वोत्तम प्रबन्धकीय कौशल तथा प्रणाली, प्रौद्योगिकी और उपकरण उपलब्ध कराते हैं। हालाँकि यह बहस का विषय है कि मेज़बान देश इन सर्वोत्तम तकनीकों को आत्मसात कर सकते हैं कि नहीं। जब तक कि प्रबन्धन में कुछ सीमा तक नियंत्रण की अनुमति नहीं दी जाती है, प्रौद्योगिकी स्वामि सामान्यतया अपनी प्रौद्योगिकी उपलब्ध कराने के इच्छुक नहीं रहते हैं। इस प्रकार बहुराष्ट्रीय कार्यकलाप में जहाँ निवेशक का संसाधनों पर कुछ प्रबन्धकीय नियंत्रण होता है मेज़बान देशों को सर्वोत्तम प्रौद्योगिकी उपलब्ध हो जाती है। यह न सिर्फ़ आधुनिक प्रौद्योगिकी उपलब्ध कराता है अपितु स्वच्छ पर्यावरण एवं अनुकूल प्रौद्योगिक़ी भी लाता है।

बहुराष्ट्रीय उपक्रम एक संगठन की भाँति विभिन्न प्रकार के संसाधन, क्षमताएँ और यहाँ तक कि बाज़ार भी उपलब्ध कराती हैं। वे न सिर्फ़ रोज़गार और परिसंपत्तियों के सृजन अपितु विभिन्न प्रकार के उद्यमों में अपनी भागीदारी के माध्यम से विदेशी मुद्रा की भी आपूर्ति में सहायक होते हैं। बहुराष्ट्रीय उपक्रमों की उपस्थिति से निर्यात और कम लागत वाला आयात बढ़ता है। अंतत: बहुराष्ट्रीय उपक्रम विश्वस्तरीय और समय की कसौटी पर खरा भूमंडलीय मानक लाते हैं। बहुराष्ट्रीय कार्यकलाप न सिर्फ़ स्थानीय मूल्य संवर्द्धन में योगदान करते हैं अपितु स्थानीय संसाधनों की प्रतिस्पर्धात्मकता और क्षमताओं को भी बढ़ाते हैं।

बहुराष्ट्रीय उपक्रमों का किसी अर्थव्यवस्था पर महत्त्वपूर्ण राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक प्रभाव पड़ सकता है। सर्वप्रथम, बहुराष्ट्रीय उपक्रम मेज़बान देश जो व्यापार घाटा से जूझता रहता है के लिए पूँजी के प्रवाह के रूप में व्यापार घाटा की समस्या को कम कर देता है। यह पाया गया है कि आरम्भ में बहुराष्ट्रीय उपक्रम का भुगतान संतुलन मेज़बान देश के अनुकूल तथा मूल देश के प्रतिकूल होता है। तथापि, बाद में यह स्थिति उलटी हो जाती है। मेज़बान देशों की कुछ वास्तविक आशंकाएँ होती हैं। यह कहा जाता है कि जहाँ संसाधनों को जुटाने का प्रश्न होता है बहुराष्ट्रीय उपक्रम की तुलना में स्थानीय उद्यमी पिछड़ जाते हैं इस प्रकार स्थानीय उद्यमियों अथवा कंपनियों के सफाये की संभावना रहती है तथा उनमें उपलब्ध सर्वोत्तम स्थानीय संसाधनों पर कब्जा कर लेने की क्षमता होती है। एक देश में एक निश्चित स्तर तक विकास के बाद बहुराष्ट्रीय उपक्रम की भागीदारी से मेज़बान देश में अनुसंधान और विकास कार्यकलापों में भी कमी आ सकती है।

बहुराष्ट्रीय उपक्रमों का प्रभाव सिर्फ़ मेज़बान देश तक ही सीमित नहीं रहता है। इसका मूल देश पर भी प्रभाव पड़ता है। किसी अन्य देश में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के कारण मूल देश में नौकरियों के जाने का खतरा रहता है। एक तर्क यह भी दिया गया है कि मूल देश की प्रौद्योगिक़ीय श्रेष्ठता के समाप्त होने की संभावना भी रहती है। एक अन्य संभावित प्रभाव

यह हो सकता है कि मूल देश की कर आय घट जाए क्योंकि कंपनी का प्रचालन आधार मूल देश से किसी अन्य देश में हस्तांतरिक कर दिया जाता है जहाँ कर ढाँचा उदार होता है अथवा कर की दरें कम होती हैं। पुनः बहुराष्ट्रीय उपक्रम द्वारा सरकार के नियंत्रण को निष्प्रभावी किए जाने की भी संभावना रहती है क्योंकि उनकी अन्तरराष्ट्रीय पूँजी बाज़ार में सीधी पहुँच होती है तथा वह घरेलू मौद्रिक नीतियों को धोखा देती हैं।

स्थानीय प्रथाओं और रोज़गार को नियंत्रित/विनियमित करने वाली समष्टि आर्थिक नीतियों के बावजूद बहुराष्ट्रीय उपक्रमों द्वारा श्रम बल अथवा नियोजन के विभिन्न पहलुओं जैसे रोज़गार का स्तर और वृद्धि प्रतिफल/प्रतिपूर्ति, कार्य दशा, मानव संसाधन विकास, औद्योगिक संबंध और श्रम बल की गुणवत्ता को भी प्रभावित किए जाने की संभावना रहती है। जब व्यापार पर बहुराष्ट्रीय उपक्रमों के प्रभाव की बात आती है तो उपलब्ध साहित्य में व्यापार पर बहुराष्ट्रीय उपक्रम के प्रभाव (विस्तार अथवा दिशा) पर सामान्य चर्चा नहीं है। तथापि, अनुभव सिद्ध अध्ययन से यह सुदृढ़ रूप से स्थापित होता है कि बहुराष्ट्रीय उपक्रमों ने वर्षों में विश्व व्यापार की संरचना और संघटन को बदल दिया है।

बोध प्रश्न 5

1) अर्थव्यवस्था के विकास में बहुराष्ट्रीय कंपनी क्या भूमिका निभाती है?

.....

.....

.....

.....

.....

2) बहुराष्ट्रीय कार्यकलापों के संभावित प्रभाव क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

16.4 सारांश

आज, अनेक देश विभिन्न कार्यकलापों में प्रतिबंधों की अलग-अलग मात्रा के साथ प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की अनुमति देते हैं। नब्बे के दशक के आरम्भ से प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के अन्तर्वाह में वृद्धि की रुझान रही है। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में विशेषकर हाल के दिनों में वृद्धि हो रही है। बहुराष्ट्रीय कार्यकलाप के रूप में बढ़ता हुआ प्रत्यक्ष विदेशी निवेश राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं द्वारा किए जा रहे भूमंडलीकरण के प्रयासों, विश्व बाज़ार की बढ़ती हुई अखंडता और अंतिम किंतु अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण उदारीकरण तथा निवेश के लिए नए क्षेत्रों के खुलने से संभव हुआ है। निजी क्षेत्र की बढ़ती हुई भूमिका और सीमा रहित भूमंडलीकृत उत्पादन की ओर ध्यान केन्द्रित होने से फर्मों के लिए अब यह आवश्यक हो गया है कि निवेश की अवस्थिति का प्रतिस्पर्धी लाभ उठाएँ।

भूमंडलीय स्तर पर अखंडता बहुराष्ट्रीय कार्यकलापों के विभिन्न स्वरूपों के विकास को और आगे बढ़ाते रहेगा। सांख्यिकी आँकड़ों से पता चलता है कि राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाएँ जिन्होंने अपनी अर्थव्यवस्थाओं का भूमंडलीकरण और उदारीकरण किया उन्हें प्रत्यक्ष विदेशी निवेश से लाभ हुआ। इस प्रकार, पूरे भूमंडल में निजीकरण और भूमंडलीकरण की ओर बढ़ते कदम के साथ बहुराष्ट्रीय कार्यकलाप राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं में अधिक बृहत् भूमिका निभाएँगे। कोई देश विकसित है अथवा विकासशील इस तथ्य से निरपेक्ष विदेशी और घरेलू स्वामित्व वाले उपक्रमों का सहअस्तित्व बना रहेगा। 1990 के दशक में आर्थिक उदारीकरण के साथ-साथ संचार, परिवहन और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्रगति होने से उत्पादन और बाज़ार के अन्तरराष्ट्रीय घटक कहीं अधिक तेजी से क्रमश: एक दूसरे से जुड़ रहे हैं। इस प्रकार आने वाले समय में बहुराष्ट्रीय कार्यकलाप और ज़ोर पकड़ेगा। हाल में पूरे भूमंडल में न सिर्फ़ व्यापार के क्षेत्र में अपितु निवेश के क्षेत्र में भी बहुपक्षीय प्रकार की व्यवस्थाओं की ओर बढ़ने के प्रयास किए जा रहे हैं। निवेश का यह बहुपक्षीय दृष्टिकोण प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के अधिक प्रवाह के माध्यम से बहुराष्ट्रीय कार्यकलापों को और आगे बढ़ाएगा। इस प्रकार, विभिन्न देशों द्वारा शुरू किए गए उदारीकरण प्रयासों को और बल मिलेगा।

16.5 शब्दावली

प्रत्यक्ष विदेशी निवेश : एक ऐसा निवेश जो दीर्घकालीन संबंधों से जुड़ा है और स्थायी हित तथा एक उपक्रम में एक अर्थव्यवस्था अवस्थित सत्ता का नियंत्रण प्रत्यक्ष विदेशी निवेशक से अलग अर्थव्यवस्था में अवस्तित उपक्रम को प्रदर्शित करता है।

भूमंडलीकरण : पूरे विश्व में बाज़ार के अधिक एकीकरण की प्रवृत्ति

बहुराष्ट्रीय : बहुराष्ट्रीय फर्म वे हैं जो एक से अधिक देशों में उत्पादन प्रक्रिया की स्वामि हैं, इसका नियंत्रण तथा प्रबंधन करती हैं और मूल्य संवर्द्धन कार्यकलापों का सृजन करती हैं।

पारदेशीयता : बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ जहाँ स्वामी प्रबन्धक एक से अधिक देशों के होते हैं।

पूर्ण स्वामित्व वाली अनुषंगी : विदेशी बाज़ार में प्रवेश करने का एक तरीका जिसमें विद्यमान फर्म के प्रचालन पर पूरा नियंत्रण स्थापित करने के लिए इसका पूरा अधिग्रहण किया जाता है।

अन्तरराष्ट्रीय विलय और अधिग्रहण : प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का रूप जहाँ विदेशी फर्म विद्यमान स्थानीय फर्म का अधिग्रहण करती है अथवा उसके साथ विलय कर लेती है जिससे अधिग्रहित अथवा विलय किए गए फर्म में नियंत्रण बदल जाता है।

मूल देश : वह देश जिसमें मूल फर्म पंजीकृत अथवा अवस्थित है।

मेज़बान देश : वह देश जहाँ बहुराष्ट्रीय फर्म विभिन्न मूल्य संवर्द्धित कार्यकलापों की स्वामी हैं, उसे नियंत्रित करती हैं अथवा उसका प्रबन्ध करती हैं।

16.6 कुछ उपयोगी पुस्तकें एवं संदर्भ

कुलेन, जॉन बी. (1999). *मल्टीनेशनल मैनेजमेंट : ए स्ट्रेट्रेजिक एप्रोच,* साउथ वेस्टर्न कॉलेज पब्लिशिंग, यू एस ए।

डनिंग, जॉन एच. (1996). *मल्टीनेशनल इन्टरप्राइसेस एण्ड दि ग्लोबल इकनॉमी,* एडीसन बेस्ली, इंग्लैंड।

वर्ल्ड इन्वेस्टमेंट रिपोर्ट्स, विभिन्न अंक।

16.7 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

बोध प्रश्न 1

1) भाग 16.1 का दूसरा अनुच्छेद देखिए।

2) उपभाग 16.1.2 का दूसरा और चौथा अनुच्छेद देखिए।

3) भाग 16.1 का दूसरा अनुच्छेद देखिए।

बोध प्रश्न 2

1) उपभाग 16.2.1 देखिए।

2) उपभाग 16.2.1 देखिए।

3) (क) गलत (ख) सही।

बोध प्रश्न 3

1) उपभाग 16.2.2 का तीसरा अनुच्छेद देखिए।

2) उपभाग 16.2.2 देखिए।

3) उपभाग 16.2.2 का चौथा अनुच्छेद देखिए।

बोध प्रश्न 4

1) उपभाग 16.2.3 का दूसरा अनुच्छेद देखिए।

2) उपभाग 16.2.3 का तीसरा अनुच्छेद देखिए।

3) उपभाग 16.2.3 का चौथा अनुच्छेद देखिए।

बोध प्रश्न 5

1) भाग 16.3 देखिए।

2) भाग 16.3 देखिए।